

## पूर्वावलोकन

प्रतिवेदित वर्ष (२००४-०५) को १०वीं पंचवर्षीय योजना की मध्यावधि के रूप में जाना गया। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने योजना आयोग के मध्यावधि मूल्यांकन की कार्यवाही में भाग लिया। इससे अपनी प्रगति को आंकने का एक महत्वपूर्ण अवसर मिला और परिषद की गतिविधियों को बढ़ाने के लिए क्षेत्रों की पहचान की गई। दसवीं योजना के प्रथम तीन वर्षों (२००२-०५) के दौरान परिषद को निर्धारित पूर्ण योजना राशि रु. १७० करोड़ में से रु. ४७७ करोड़ की धन राशि प्राप्त हुई और इस पूरी धन राशि का लाभकारी उपयोग किया जा चुका है।

वर्ष २००४-२००५ के दौरान स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय से कुल रु. २०४ करोड़ प्राप्त हुए। इसका लगभग ३० प्रतिशत हिस्सा परिषद के एक्स्ट्राम्युरल अनुसंधान कार्यक्रमों, २८ प्रतिशत कैपिटल कार्यों, २० प्रतिशत उपभोज्य वस्तुओं (कंचुमेबल्स) और १० प्रतिशत हिस्सा उपकरणों पर व्यय किया गया। वेतन और भत्तों (पेंशन सहित) पर १७ प्रतिशत व्यय किया गया।

दिसम्बर २००४ में देश के तटीय क्षेत्र सुनामी लहरों से प्रभावित हुए थे। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के अनेक संस्थानों ने तमिल नाडु, पॉण्डिचेरी, केरल, आंध्र प्रदेश और अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह में आपातकालीन रोग निगरानी सेवा स्थापित करने में राज्य के अधिकारियों को सहायता प्रदान की। इसके माध्यम से खसरा, रोटाविषाणु अतिसार और मलेरिया के स्थानिक प्रकोपों की शीघ्र पहचान करना और नियंत्रण उपायों को स्थापित करना संभव था। परिषद के दलों ने आपदा पीड़ित व्यक्तियों को सहायता पहुंचाने का भी कार्य किया।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने जैवप्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग में मूल कोशिका अनुसंधान और उपचार के लिए एक संशोधित रूप में राष्ट्रीय दिशानिर्देश तैयार किया है। इन दिशानिर्देशों में मानव मूल कोशिकाओं की व्युत्पत्ति; बैंकिंग, उनके प्रवर्धन एवं प्रयोग के वैज्ञानिक, नीति विषयक और वैधानिक पहलुओं को सम्मिलित किया गया है। इन्हें अनुमोदन और कार्यान्वयन के लिए स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार को प्रेषित किया जा रहा है।

देश में मधुमेह मेलिटस की उभरती महामारी को देखते हुए टाइप II मधुमेह के चिकित्सा प्रबंध के लिए दिशानिर्देश तैयार किए गए हैं। उनमें नैदानिक मापदण्डों, मधुमेह के भेषजगुणविज्ञानी और अभैषजिक चिकित्सा प्रबंध, जटिलताओं और नियंत्रण के लिए लक्ष्यों का वर्णन किया गया है।

देश में पहली बार असंचारी रोगों के भार का मूल्यांकन किया गया है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के इस प्रतिवेदन (रिपोर्ट) में असंचारी रोगों में अनुसंधान हेतु आर्बाटित राशि को बढ़ाने के लिए बहुत आवश्यक प्रमाण की प्रस्तुति की गई है।

मुखीय कैंसर पर परियोजनाओं के अन्तर्गत भारतीय रोगियों के लिए विशिष्ट प्रतिरक्षा अनुक्रिया और जीन उत्परिवर्तन के स्वरूपों की पहचान की जा रही है। दमा पर चार केन्द्रों द्वारा जारी एक अध्ययन में इसकी व्यापकता १.७% से ३.५% के बीच पाई गई है।

रुमेटी ज्वर और रुमेटी रक्तसावी ज्वर पर संपन्न सक्रिय निगरानी में स्कूली बच्चों में इनकी व्यापकता ०.३६/१००० से १.४३/१००० के बीच पाई गई।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकी क्लिनिकों के प्रत्यायन, पर्यवेक्षण और

नियमन के लिए पूर्व में विकसित दिशानिर्देशों को अब राष्ट्रीय दिशानिर्देशों के रूप में अपना लिया गया है।

‘माइक्रोन्यूट्रिएंट प्रोफाइल ऑफ इंडियन पॉपुलेशन’ शीर्षक से एक सार-संग्रह (कॉर्पोडियम) का प्रकाशन किया गया है जिसमें ८०० प्रकाशनों से प्राप्त आंकड़ों की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। इसमें जिंक और फोलिक एसिड पर अधिक शोध अध्ययनों की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान, पुणे में स्थित सूक्ष्मजीवी परिरोधन कॉम्प्लेक्स में निर्मित उच्च परिरोधन प्रयोगशाला (बी एस एल - ३+) को राष्ट्र को समर्पित किया। माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री ने ससुनावधर में राष्ट्रीय गैर मानव प्राइमेट प्रजनन और अनुसंधान केन्द्र की आधारशिला रखी। यह केन्द्र विशिष्ट होने के साथ-साथ ज्ञात नसल के उच्च कोटि के गैर मानव प्राइमेट्स के लिए महत्वपूर्ण संसाधन होगा। यह केन्द्र भारत और विदेश में वैज्ञानिकों के लिए महत्वपूर्ण शोध एवं प्रशिक्षण के अवसर तो प्रदान करेगा ही साथ में प्राइमेट्स में रोगों के सहज बढ़ने की स्थिति का अध्ययन करने में सहायता प्रदान करेगा।



विगत दो वर्षों के दौरान मूलभूत ढांचे जैसे कि माइक्रोएरे को बेहतर बनाने हेतु किए गए महत्वपूर्ण निवेशों से लाभ मिलने की शुरुआत हो गई है। चेन्नई स्थित यक्ष्मा अनुसंधान केन्द्र में एम. ट्युबरकुलोसिस

के इप्लक्स पंपस के लिए कूट बनाते जीनों के लिए एक माइक्रोएरे विकसित किया गया है और औषध प्रतिरोध के साथ संबद्ध नवीन पंपस की पहचान की जा रही है।



नई दिल्ली स्थित विकृतिविज्ञान संस्थान में लीशमानिया में उग्रता संबद्ध जीनों की पहचान करने के लिए माइक्रोएरे पर आधारित संपन्न अध्ययनों में विशेषता ज्ञात किए जा रहे लगभग ३.५% क्लोनों की विभेदक अभिव्यक्ति देखी गई। सोडियम एंटीमनी ग्लूकोनेट औषध के प्रति अनुक्रिया प्रदर्शित करने और अनुक्रिया प्रदर्शित नहीं करने वाले व्यक्तियों से प्राप्त एल. डोनोंवनी के आइसोलेट्स में जीन की अभिव्यक्ति का अध्ययन करने के लिए माइक्रोएरे पर आधारित एक अन्य अध्ययन में प्रतिरोधी और सुग्राही दोनों प्रकार के क्लोनों में लगभग २% क्लोनों में १.५ गुणा अधिक अभिव्यक्ति देखी गई। उत्तर कालाज्वार त्वक लीशमैनियता (पी के डी एल) और अंतरांग लीशमैनियता (वी एल) से पीड़ित रोगियों से पृथक किए गए परजीवियों का अध्ययन करने पर ४६ क्लोनों की पहचान की गई है जिनमें वी एल की तुलना में पी के डी एल मूल के परजीवियों में विभेदक अभिव्यक्ति देखी गई।

गुजरात और आंध्र प्रदेश में मस्तिष्कशोथ के प्रकोपों का अध्ययन करने के परिणामस्वरूप प्रकोप के लिए जिम्मेदार चण्डीपुरा विषाणु की पहचान की गई। संयुक्त राज्य अमरीका के अटलांटा स्थित रोग नियंत्रण और निवारण केन्द्र के सहयोग में पश्चिम बंगाल के



देश भर में फैले परिषद के अनुसंधान संस्थान तथा केन्द्र

वार्षिक प्रतिवेदन 2004-2005



## आई सी एम आर

सिलीगुड़ी में २००१ में हुए प्रकोपों से भण्डारित किए गए जैविक नमूनों पर और अध्ययन किए गए। इस संकेत का प्रमाण है कि उस प्रकोप के पीछे निपाह विषाणु का हाथ था।

प्रतिवेदित अवधि के दौरान मानव इंप्लुएंज़ा के लिए बहुस्थलीय जानपदिक रोगविज्ञानी और विषाणुविज्ञानी निगरानी की शुरुआत की गई है।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और केनेडियन इंस्टीट्यूट्स फॉर हेल्थ रिसर्च (सी आई एच आर) के बीच स्वास्थ्य अनुसंधान में सहयोग हेतु सहमति ज्ञापन

पर हस्ताक्षर किए गए। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, साउथ अफ्रीकन मेडिकल रिसर्च काउंसिल और एफ आई ओ सी आर यू जेड, ब्राज़ील के बीच एक त्रिपक्षीय समझौते पर भी हस्ताक्षर किए गए जिसका उद्देश्य तीनों देशों के लिए सामान्य स्वास्थ्य स्थितियों पर मिलकर कार्य करना है।

वर्ष २००४ में परिषद के वैज्ञानिकों द्वारा कुल ४५४ शोध पत्र प्रकाशित किए गए। प्रति शोध पत्र औसत इंपैक्ट फैक्टर वर्ष २००३ में २.१८० की तुलना में वर्ष २००४ में २.३२६ था।